वर्धमान महावीर खुला विश्व विद्यालय कोटा

कुल –गीत

वीर उर्वरा धरती जिसको कहते राजस्थान,
मुक्त भाव से बाँट रहा है चहुँ दिश मेँ अब ज्ञान ।
वर्धमान – महावीर – खुला विश्वविद्यालय ॥
सा विद्या या विमुक्तये, सा विद्या या विमुक्तये ॥

चाहे महल अमीरोँ के हो या निर्धन की ढाँणी
भेद नहीँ करती है किँचित यह शिक्षा की आँधी ।
द्वार खुले हैँ इस मन्दिर के सरल प्रवेश नियम हैँ
मिले उच्च शिक्षा वँचित को अवसर बहुत सुगम हैँ ।
ज्ञान यज्ञ की समिधा मिलना हुआ बहुत आसान ।
मुक्त भाव से बाँट रहा है चहुँ दिश मेँ अब ज्ञान ॥
सा विद्या या विमुक्तये, सा विद्या या विमुक्तये ॥
सुविधाओँ की सरिता बहती, बना नवल इतिहास,
है जनतँत्रीकरण ज्ञान का, जनता का विश्वास ।
नव आशाएँ, नई दिशायेँ, नई नई तकनीक
जन जन मेँ शिक्षा प्रसार की थामी इसने लीक ।
तपोभूमि यह , नव शोधोँ का होता है सम्मान ।
मुक्त भाव से बाँट रहा है चहुँ दिश मेँ अब ज्ञान ॥
सा विद्या या विमुक्तये, सा विद्या या विमुक्तये ॥
मोर, पपीहे, कोयल का स्वर, हरी भरी लतिकायेँ,
चम्बल की कल कल सँग बहती शीतल मँद हवायेँ ।
गोद प्रकृति की बसा भुवन जीवन सँगीत सुनाये
नई भोर का नव सूरज बन नूतन अलख जगाये ।
विद्या का यह प्राँगण करता है सबका आह्वान|
मुक्त भाव से बाँट रहा है चहुँ दिश मेँ अब ज्ञान ||
वर्धमान – महावीर – खुला विश्वविद्यालय ॥
सा विद्या या विमुक्तये, सा विद्या या विमुक्तये ॥
सा विद्या या विमुक्तये, सा विद्या या विमुक्तये ॥
सा विद्या या विमुक्तये, सा विद्या या विमुक्तये ॥

शरद तैलँग